मण्डल की पुस्तकों की सूची।

चिकागो प्रश्नोत्तर (अ०)	।।।)	प्राचीन कविता संग्रह	।=)
पंच तीर्थ पूजा	-)।।	विमलविनोद	।।=)
देवसिराइ प्रति क्रमण	।)	जिन कल्याणक संग्रह	-)
जीव विचार हिंदी अर्थ सहित	।-)	ज्ञान थापने की विधि	≡)
नवतत्व ,,	,, ।-)	देव परीक्षा	-)।।
दण्डक ,,	,, ।)	सम डिस्टिंगुइश्ड जैन्स	।।)
कर्म ग्रन्थ पहला	,, ।।=)	स्टडी आफ जैनिज्म	।।।)
,, दूसरा	,, ।।।)	सप्तभंगीनय	।=)
,, तीसरा	,, ।।)	लार्ड कृष्णाज मैसेज	।)
,, चौथा	,, २)	उपनिषद् रहस्य	=)।।
योगदर्शन तथा योगविंशिका	१।।)	साहित्य संगीत निरूपण	।।=)
भक्तामर कल्याण मंदिर स्तोत्र	=)	तत्व निर्णय प्रासाद	१०)
वीतराग स्तोत्र	≡)	जैन धर्म विषयिक प्रश्नोत्तर	।।)
श्री उत्तराध्ययन सूत्र सार	=)	चिकागो प्रश्नोत्तर (हिंदी)	१)
दर्शन और अनेकान्तवाद	।।)	पूजा संग्रह	१।।=)
पुराण और जैन धर्म	।।।)	श्री महावीर प्रभु पंच	
बारह व्रत की टीप	≡)	कल्याणक पूजा	-)
हिन्दी जैन शिक्षाभाग १	)।।	श्री निन्नानवे प्रकारी पूजा	।)
,, ,, २	-)	शारदा पूजन	।)
,, ,, ३	-)।।	पंच प्रतिक्रमण	।।।)
,, ,, ४	=)	चतुर्दश नियमावलि	-)।।
भजन पचासा	-)।।	महासतीचन्दनबाला	।=)
इन्द्रिय पराजय दिग्दर्शन	।=)	सामायिक और देववन्दन	
सतुवीर रत्ना प्रथम भाग	।=)	सूत्र विधि	-)

॥ श्रीमद्विजयानन्दसूरिभ्यो नमः ॥

हिन्दी जैन-शिक्षा ।

दूसरा भाग

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥

पहिला पाठ ।

[नमस्कार सूत्र और उसका अर्थ ।]

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं ॥

नमो अरिहंताणं—अरिहंत भगवान् को नमस्कार हो । नमो सिद्धाणं—सिद्धपरमात्मा को नमस्कार हो । नमो आयरियाणं—आचार्य महाराज को नमस्कार हो।नमोउवज्झायाणं उपाध्याय महाराज को नमस्कार हो । नमो लोए सव्व साहूणं—ढाई द्वीप में वर्तमान सब साधुओं को नमस्कार हो।

[नमस्कार सूत्र का फल और उसका अर्थ ।]

एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम् ॥

एसो पंचनमुक्कारो–यह पाचों को किया हुआ नमस्कार, सव्वपावप्पणासणो–सर्व पापों का नाश करने वाला है।
मगलाण च सव्वेसि—और सब मगलों मे, पढम हवइ मगल—पहला मगल है।

दूसरा पाठ।

[नवपद-सिद्ध चक्र।]

१ अरिहन्तपद, २ सिद्धपद, ३ आचार्य पद, ४ उपाध्यायपद, ५ साधुपद, ६ दर्शन पद, ७ ज्ञानपद, ८ चारित्रपद, ९ तपपद।

[पञ्च परमेष्ठी के १०८ गुण।]

श्री अरिहन्त भगवान् के	१२ गुण
श्री सिद्ध भगवान् के	८ गुण
श्री आचार्य महाराज के	३६ गुण
श्री उपाध्याय महाराज के	२५ गुण
श्री साधु महाराज के	२७ गुण

इन पञ्च परमेष्ठी के १०८ गुण होते हैं, इसी कारण नवकारमाला मे १०८ मनके होते हैं।

[नव पदों का वर्ण ।]

१ अरिहन्तपद का शुक्ल । ६ दर्शनपद ।
२ सिद्धपद का रक्त । ७ ज्ञानपद ।
३ आचार्यपद का पीत । ८ चारित्रपद ।
४ उपाध्यायपद का नील । ६ तपपद ।
५ साधुपद का श्याम ।

(६–९ : श्वेत)

यह वर्ण ध्यान के लिये समझना चाहिये ।

[तीर्थङ्कर के मूल चार अतिशय ।]

१ ज्ञान–अतिशय, २ वचन–अतिशय, ३ अपायापगम अतिशय, ४ पूजा–अतिशय ।

[अनन्त चतुष्टय ।]

१ अनन्तज्ञान, २ अनन्तदर्शन, ३ अनन्त सुख, ४ अनन्तवीर्य ।

तीसरा पाठ ।

[वर्त्तमान चौवीसी ।]

१ श्री ऋषभदेवजी, २ अजितनाथ, ३ संभव नाथ, ४ अभिनन्दन, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभु

१—इस प्रकार अन्य सब भगवानों के नाम के पहले "श्री" और पीछे "जी" लगाकर बोलना चाहिये ।

७ सुपार्श्वनाथ, ८ चन्द्रप्रभु, ९ सुविधिनाथ–पुष्पदन्त, १० शीतलनाथ, ११ श्रेयासनाथ, १२ वासुपूज्य, १३ विमलनाथ, १४ अनन्तनाथ, १५ धर्मनाथ, १६ शान्तिनाथ, १७ कुन्थुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० मुनिसुव्रत, २१ नमिनाथ, २२ नेमिनाथ, २३ पार्श्वनाथ, २४ महावीरस्वामी––वर्धमानस्वामी ।

[अतीत (गई) चौवीसी ।]

१ केवलज्ञानी २ निर्वाणी ३ सागर ४ महायश ५ विमल ६ सर्वानुभूति ७ श्रीधर ८ दत्त ९ दामोदर १० सुतेज ११ स्वामी १२ मुनि सुव्रत १३ सुमति १४ शिवगति १५ अस्ताग १६ नमीश्वर १७ अनिलनाथ १८ यशोधर १९ कृतार्थ २० जिनेश्वर २१ शुद्धमति २२ शिवकर २३ स्यन्दन २४ सम्प्रति ।

[अनागत (होने वाली) चौवीसी ।]

१ पद्मनाभ २ सुरदेव ३ सुपार्श्वनाथ ४ स्वयम्प्रभु ५ सर्वानुभूति ६ देवश्रुत ७ उदयप्रभु ८ पेढालप्रभु ९ पोट्टिलप्रभु

१० शतकीर्ति, ११ सुव्रतनाथ, १२ अममनाथ, १३ निष्कषाय, १४ निष्पुलाक, १५ निर्ममनाथ, १६ चित्रगुप्ति, १७ समाधिनाथ, १८ संवरनाथ, १९ यशोधर, २० विजयनाथ, २१ मल्लिप्रभु, २२ देवप्रभु, २३ अनन्तवीर्य्य, २४ भद्रङ्कर।

[बीस विहरमाण जिनवर।]

१ सीमंधर, २ युगमंधर, ३ बाहु, ४ सुबाहु, ५ सुजात, ६ स्वयप्रभु, ७ ऋषभानन, ८ अनन्तवीर्य, ९ सुरप्रभु, १० विशाल, ११ वज्रधर, १२ चन्द्रानन, १३ चन्द्रबाहु १४ भुजङ्ग, १५ ईश्वर, १६ नेमिप्रभु, १७ वीरसेन, १८ देवयश, १९ चन्द्रायण, २० अजितवीर्य।

[चार शाश्वत जिनवर।]

१ ऋषभानन, २ चन्द्रानन, ३ वारिषेण, ४ वर्धमान।

चौथा पाठ।

[बारह चक्रवर्ती।]

१ भरत, २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत् कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्थु, ७ अर, ८ सूभूम, ९ महापद्म, १० हरिषेण, ११ जय, १२ ब्रह्मदत्त

[नौ वासुदेव।]

१ त्रिपृष्ट, २ द्विपृष्ट, ३ स्वयम्भू, ४ पुरुषोत्तम ५ पुरुषसिंह, ६ पुरुषपुण्डरीक, ७ दत्त, ८ लक्ष्मण, ९ कृष्ण।

[नौ प्रतिवासुदेव।]

१ अश्वग्रीव, २ तारक, ३ मेरक, ४ मधु, ५ निशुम्भ, ६ बलेन्द्र, ७ प्रह्लाद, ८ रावण, ९ जरासन्ध।

[नौ बलदेव।]

१ अचल, २ विजय ३ सुभद्र, ४ सुप्रभु, ५ सुदर्शन, ६ आनन्द, ७ नन्दन, ८ पद्म–रामचन्द्र, ९ बलभद्र।

[चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न।]

१ बैल, २ हाथी, ३ घोड़ा, ४ बंदर, ५ क्रौञ्चपक्षी, ६ पद्म, ७ स्वस्तिक–साथिया, ८ चन्द्र, ९ मकर, १० श्रीवत्स, ११ गेंडा, १२ महिष, १३ वराह, १४ सिंचाणा बाज, १५ वज्र, १६ हरिण, १७ बकरा, १८ नन्दावर्त, १९ कलश, २० कच्छप, २१ नीलकमल, २२ शङ्ख, २३ सर्प, २४ सिंह।

[चौदह स्वप्न ।]

जब तीर्थंकर भगवान् गर्भ में आते हैं तब उनकी माता नीचे लिखे हुए स्वप्न देखती है। और चक्रवर्ती की माता भी जब चक्रवर्ती गर्भ में आते हैं तब ये ही चौदह स्वप्न कुछ धुँधले देखती हैं.—

१ हाथी, २ बैल, ३ सिंह, ४ लक्ष्मी, ५ पुष्प माला, ६ चन्द्र, ७ सूर्य, ८ ध्वजा, ९ कलश, १० पद्मसरोवर, ११ क्षीरसागर, १२ देवविमान, १३ रत्नपुञ्ज, १४ विना धुँए की अग्नि।

[अष्ट मांगलिक द्रव्य ।]

१ स्वस्तिक साथिया, २ दर्पण, ३ कुम्भ, ४ भद्रासन, ५ वर्धमान, ६ श्रीवत्स, ७ नन्द्यावर्त्त, ८ मीनयुगल।

पांचवाँ पाठ।

पिता पुत्र संवाद।

[जिन मन्दिर।]

पुत्र — पिताजी! यह पीले कलश वाला सफेद ऊँचा सा क्या,

पिता–पुत्र ! यह जिनेन्द्र भगवान् का मान्दिर है इसमें श्रीतीर्थंकर भगवान्‌की मूर्ति विराजमान है।
पुत्र–चलो, अपने भी दर्शन करें (दोनों अन्दर गये ।)
पुत्र–छत्र, चामर, मुकुट, कुण्डल राजा को होते हैं, ने यहा क्यों रक्खे गये हैं ?
पिता–यह राजाओं के भी राजा हैं, तीन लोक के पूज्य हैं । इन्द्रादि देव तथा चक्रवर्ती राजा आदि भी इनकी सेवा–भक्ति करते हैं ।
पुत्र–क्या अपन भी पूजन कर सकते हैं ?
पिता–हाँ हाँ ! क्यों नहीं ? स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, जल, केसर, पुष्प आदि अष्ट द्रव्य से पूजा कर सकते हैं
पुत्र–मैं भी पूजा करना चाहता
पिता और पुत्र ने वि...
चैत्यवन्दन आदि स्त...
बहुत प्रसन्न होकर

पिताजी ! मुझे हमेशा पूजन कराया करो।

सत्य है कि जो पुण्यशाली बालक होता है उसको बचपन से ही अच्छे २ कार्य्यों की रुचि होती है। हे बालको ! तुम भी इसी तरह अच्छे कार्य करने के लिये हमेशा तत्पर रहो।

[साधु-भक्ति।]

पुत्री— हे माता ! ये नगे सिर वाले कौन आ रहे हैं ?

माता—बेटी ! ये मुनिमहाराज हैं, बडे परोपकारी हैं, शुद्ध आहार पानी लेने के लिये गोचरी आये हैं।

पुत्री—क्या इनके घर नहीं है, जो दूसरी जगह से रोटी लाते हैं ?

माता—ये पहले बहुत बडे कुटुम्बी और धनवान् थे परन्तु इन्होंने इस ससार को दु ख का कारण जान कर सर्वोत्तम जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की है। ये सच्चे धर्म्म का जीवों को उपदेश सुना कर उनका उद्धार करते हैं।

पुत्री—हे माता! ऐसे महात्मा त्यागी को अपन भी आहार पानी लेने के लिये प्रार्थना करें।

माता और पुत्री दोनों ने जाकर विनय पूर्वक शुद्ध आहार के लिये प्रार्थना कर पात्र में दान दिया, जिससे पुण्योपार्जन किया।

हे बालक, बालिकाओं! तुम भी ऐसे सुसाधुओं की भक्ति के लिये हमेशा तत्पर रहो, ताकि तुम्हारा कल्याण हो।

छठा पाठ।

दो सखियाँ।

[फिजूलखर्ची।]

कचौड़ी, जलेबी, पेड़ा, बरफी २ यह सुन कर—

लक्ष्मी—मास्टर साहब! मैं जरा बाहर हो आऊँ?

मास्टर—क्यों?

लक्ष्मी—खोमचा आया है। कुछ लेने की मशा है।

मास्टर—क्या भोजन नहीं किया है?

ल०—भोजन तो अच्छी तरह किया है पर दिल खाने को चाहता है।

मा०—देखो, यह सरस्वती कैसी मन लगा कर पढ रही है।

ल०—उसके पास पैसे न होगे।

मा०—सरस्वती ! क्या यह बात सच है?

सर०—नही, मेरे पास पैसे तो हैं पर मै अच्छी तरह जीम कर आई हूँ। इस लिये अब फिजूलखर्च करना नही चाहती।

ल०—ॲह, यह तो बडी ही चतुर दीखती है। साफ नहीं कहती कि मन होने पर भी लोभ से पैसा नही खर्च सकती। अगर खाने पीने, पहनने ओढ़ने, नाच तमाशे आदि मे खर्च न किया जाय तो फिर पैसे का उपयोग ही क्या है? जब चाहती हूँ, तब अम्मा, भाई, पिता आदि से पैसे मॉग लेती हूँ और फिर दिल खोल खर्च कर देती

हैं। जब मिले तब लोभ काहे को ? मेरे पिता वगैरह भी खूब उड़ाते हैं।

मास्टर—सरस्वती! क्या तुम लोभिन हो ? योंही पैसे इकट्ठा किया करती हो या कभी किसी काम के लिये खर्च भी करती हो ?

सरस्वती—खर्च करती तो हूँ, पर सोच समझ कर। खाना तो तीनों समय अच्छी तरह घर पर मिलता ही है, फिर जीभ को बाजारू चीज की चाट लगाने से क्या फायदा ? एक तो बाजारू माल बहुत महँगा होता है दूसरे उसमें घी, शक्कर आदि वैसे शुद्ध नहीं होते, जैसे घर की चीज में। तीसरे बाजारू चीज खाने की चाट पड़ जाने से तबियत भी बिगड़ती है, क्योंकि खाया हुआ माल पूरा पचने नहीं पाता और जीमने का डर हो जाता है। चौथे पाठशाला में पढ़ते समय मन खोमचे की ओर लगा रहता है, जिससे पढ़ा न पढ़ासा हो जाता है। इसी तरह बिना जरू-

रत ख़र्च करने से फिजूलख़र्ची की आदत पड़ जाती है और फिर कभी पैसे न मिलें तो किसी की जेब की ओर मन जाता है, जिसमें धीरे धीरे बेईमानी बढ़ती है और जीवन हलका बन जाता है।

ल० तो क्या फिर कुछ खर्चही नहीं करना चाहिये?

सरस्वती–नहीं, खर्च करना चाहिये, मगर आमदनी से ज्यादा नहीं। तथा आमदनी के भीतर भी खर्च करते समय यह ख़याल रखना चाहिये कि जिन बातों मे खर्च किया जाता है वे बेज़रूरी तो नहीं हैं। यह एक गुण है और इस गुण को 'मितव्ययिता' कहते हैं। इससे उलटा आमदनी से अधिक खर्च करना या बेज़रूरी अनुपयोगी कामों में थोड़ा भी खर्च करना 'फिजूलखर्ची' है।

ल० बेजरूरी कौन और जरूरी कौन? यह समझ मे नहीं आता, जिसको तुम बेज़रूरी समझती हो ‍ मैं जरूरी भी समझ

सकती है क्योंकि मजदूरी मिले, हासिल आदि सकती नहीं होती।

स० व०—हां ! मतलब ठीक है पर जवाब सीधा है। जिसके बिना जीवन चल नहीं सकता या जिसका नतीजा अच्छा है अर्थात् अन्त में जिस काम से भलाई होती है वह जरूरी और जिसके बिना भी जीवन अच्छी तरह निभ सकता है तथा जिसका नतीजा बुरा है, वह काम बेजरूरी। जैसे —

खुराक, पानी, कपड़े आदि जिनके बिना जीना ही कठिन है, वे चीजें जरूरी है और आतशबाजी, नाच, तमाशा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, पान आदि बेजरूरी है क्यों
के सिवाय भी जीवन
जा सकता है।
बातों के प्रचार से
जाती है तथा
ल०—आतशबाजी
कैसे बढ़ती है और

सर०—हलकी वासनाएँ अर्थात् बुरी आदते तो मनुष्य के हृदय में पहिले से ही मौजूद हैं, थोड़ासा निमित्त मिला कि वे जोर पकड़ लेती हैं और फिर मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यहाँ तक कि जो एक बार ऐसे फंदों मे फँसा, वह फिर बरबाद ही हो जाता है। बड़े बड़े लोगों के बारे में सुना जाता है कि वे शराब, आतशबाजी, नाच-तमाशे आदि झूँठे मौज मज़ों में पड़ कर अपनी इज्जत तथा सपत्ति को गँवा बैठे है। मौज शौक़ से आदमी विलासी बन जाता है। विलासिता से सुकुमारता बढ़ जाती है। फिर काम-काज करने की ओर कमाने की भी फिक्र घट जाती है। नतीजा यह होता है कि आमदनी से खर्च बढ़ जाता है। जिस से क़र्ज़ बढ़ते बढ़ते अन्त में दिवाला निकल जाता है घर बार बिक जाता है और फिर जीवन [illegible] का नहीं रहता।

ल०—वहिन! तुम ठीक कहती हो। अब मुझको इसमें सदेह नहीं रहा कि फिजूल खर्ची से जीवन बरबाद हो जाता है। पर मैं यह जानना चाहती हूँ कि फिजूलखर्ची से जीवन की भलाई कैसे रुकती है।

सर०—जब निकम्मी बातों की आदत पड़ जाती है, तब पढ़ना लिखना, नीति और धर्म पर चलना, कुटुम्ब, जाति, समाज और देश की बातों को समझना, यह सब छूट जाता है। फिजूलखर्ची की परेशानी बढ़ जाने के कारण पाठशाला, लायब्रेरी, हुनर उद्योग शाला जैसे हितकारी कामो मे थोड़ा भी चदा देना बोझसा हो जाता है। इतना ही नहीं, बल्कि बुरी आदत पड़ जाने से नियमित आहार विहार नहीं होने पाता, जिस से शरीर रोगी बन जाता है। इस तरह फिजूलखर्ची के कारण बुद्धि और शरीर दोनों की उन्नति रुक जाती है। जिन लड़कियों की शादी में नाच तमाशे आदि के लिये हजारो रुपये फूंके

जाते हैं, पर उनकी बुद्धि बढ़ाने, उनको उद्योग हुनर सिखाने और उनके शरीर को मजबूत बनाने के कामों में कुछ भी खर्च नहीं किया जाता। इस से फिज़ूलखर्च करने वालों की संतानें नीचे गिरती हैं और उनकी भलाई रुक जाती है।

मा०—सरस्वती! तुमने इतनी बातें कैसे जानीं?

सर०—मेरे माता पिता आदि रोज़ ऐसे ऐसे विषयों पर बहस किया करते हैं। उन्होंने यहाँ तक निश्चय किया है कि मेरा भाई जो बुद्धिसिंह है, उसकी शादी में तो बिलकुल खर्च घटा देना और हम सब भाई बहनों की पढ़ाई आदि के कामों में पूरा खर्च करना। मैं छुट्टी के समय पोशाल में व्याख्यान सुनने के लिये भी जाती हूँ और व्याख्यान की अच्छी अच्छी बातें लिख लेती हूँ। आजकल एक बड़े अच्छे विद्वान् महात्मा आये हैं। उन्होंने व्याख्यान में कल कहा था कि धर्म

पालन करना जैसा तैसा नहीं है।
बनने की योग्यता पहले आना चाहिये
के लिये पैंतीस गुण प्राप्त करने
फिजूलखर्ची छोड़ देना और मितव्ययिता
रखना यह भी एक खास गुण है।

लक्ष्मी और अन्य लड़कियाँ—अब हम सब समझ गईं। आज से बहुत सोच विचार कर खर्च किया करेंगी। इतना ही नहीं, बल्कि माता पिता से जो हाथ खर्च मिलता है, उससे अच्छी अच्छी किताबें खरीदा करेंगी, पाठशाला, लायब्रेरी आदि में चन्दा भी दिया करेंगी, सरस्वती के साथ पोसाल में जाया करेंगी और एक कौड़ी भी फिजूलखर्च न किया करेंगी।

मा०—अच्छा अब जाओ, छुट्टी है।

[सब सरस्वती की तारीफ करती हुई चली गईं।]

॥ इति ॥

मुद्रक—भूपसिंह शर्मा, सरस्वती प्रेस, बेलनगंज-आगरा।

हिन्दी-जैन-शिक्षा

प्रथम-भाग

प्रकाशक—

श्री आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मण्डल

रोशन मुहल्ला, आगरा।

प्रथमावृत्ति १०००] [मूल्य)॥

पालन करना जैसा तैसा नहीं है।
धनने की योग्यता पहले आना चाहिये
के लिये पेंतीस गुण प्राप्त करने
फिजूलखर्ची छोड़ देना और मितव्ययिता
रखना यह भी एक खास गुण है।

लक्ष्मी और अन्य लडकियाँ—अब हम
सब समझ गईं। आज से बहुत सोच विचार
कर खर्च किया करेंगी। इतना ही नहीं,
बल्कि माता पिता से जो हाथ खर्च मिलता है,
उससे अच्छी अच्छी किताबें खरीदा करेंगी,
पाठशाला, लायब्रेरी आदि में चन्दा भी दिया
करेंगी, सरस्वती के साथ पोसाल में जाया
करेंगी और एक कौड़ी भी फिजूलखर्च न
किया करेंगी।

मा०—अच्छा अब जाओ, छुट्टी है।

[सब सरस्वती की तारीफ करती हुई चली गईं।]

॥ इति ॥

मुद्रक—भूपसिंह शर्मा, सरस्वती प्रेस, बेलनगंज-आगरा।

हिन्दी-जैन-शिक्षा

प्रथम-भाग

प्रकाशक—
श्री आत्मानन्द पुस्तक प्रचारक मण्डल
रोशन मुहल्ला, आगरा।

प्रथमावृत्ति [१०००]

[मूल्य]॥

सूचना।

हिन्दी जैन शिक्षा प्रथम भाग प्रतापगढ़ (मालवा) निवासी श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्दजी घीया ने बहुत दिन हुए लिखा था। समयानुसार इसमें कुछ परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत हुई, इसलिए मण्डल ने उसमें उचित सुधार करके प्रकाशित किया है। सेठ साहब के परिश्रम के लिए मण्डल आभारी है।

भेट की पुस्तकें

१ देवगुरु सामायिक सूत्र।
२ जिन भक्ति आदर्श।
३ मंगल भजनावली।
४ गोपालन व पशुरक्षा।
५ चैत्य वन्दन सामायिक।
६ श्री मंदिरस्थान व सूरि शान्तिशिक्षा।
७ श्री मोहनमहर्षि गुणमाला
८ मुनि सम्मेलन।
९ मनुष्य के योग्य कुदरती खुराक।
१० स्वास्थ्य और खुराक।
(हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती)

हिन्दी-जैन-शिक्षा

प्रथम—भाग।

पाठ १
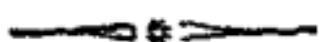
अथ वर्ण-बोध।

देवनागरी अक्षरों की वर्णमाला में ४९ अक्षर हैं उनमें १६ स्वर और ३३ व्यञ्जन हैं।

१६ स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ
ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

३३ व्यञ्जन

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न ।

प फ ब भ म । य र ल व ।

श ष स ह

३ सयुक्ताक्षर

क्ष त्र ज्ञ

पाठ २

पहिचान के लिए अक्षर।

श भ म त्र अ प द ढ झ उ र ऐ थ फ आ

ड इ ज ण ई ध ह औ च ग ञ छ अ प ड

अ ग उ ख ठ व अ ट स ल न ए त क य

स्वर मात्रा

बारहखड़ी ।

क का कि की कु कू के कै को कौ कं क

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ ख ख

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ ग गः

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घ घ

ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङ ङ

च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं च.

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छ छ

ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं ज·

झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झ झ

ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञ ञ·

ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठ ठ

ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः

ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढ ढः

ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ ण णः
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ त त
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थ थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ द द
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ ध ध
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ न न
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ प प
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फ फ
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ ब ब
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भ भ·
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ म म
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ य य
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ र र·
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ ल ल
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ व व
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ श श

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

अङ्क

एक	दो	तीन	चार	पाच	छ	सात	आठ	नौ	दस
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

पाठ ३

अ–अगर तन मन धन वन जन मल फल
आ–आप माल बाजा राजा दान आशा
इ–इस इन दिन जिन मति गति इधर
ई–ईख गीत शीत दीन हीन तीन दरी
उ–उपशम सुख मुख गुण पशु बहुत
ऊ–ऊधम रूप धूप भूप भूमि दूषण भूषण
ऋ–ऋण नृप घृत तृण मृग तृषा वृथा
ए–एक रेल मेल खेल सफेद

शरीर को शुद्ध करो, माता पिता और बड़ों को प्रणाम कर जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करने को जाओ, भगवान् के सामने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये, उपाश्रय में मुनि महाराज विराजे हों तो उनके दर्शन करो। स्कूल (पाठशाला) में जाकर प्रथम विद्यागुरु को प्रणाम करो, अपना पाठ शान्ती से याद कर सुना दो और दूसरा पाठ सीखो। पाठशालासे छुट्टी हो तब सीधे घर को जाओ। किसी से मत लड़ो। उद्यम करते रहो, समय बेकार मत खोओ। अभक्ष्य भोजन का त्याग करो, बिना जाना हुआ भो...

पानी छान कर पीना चाहिये।

चाहियें, (चाहे हलके

करो, दुराचारी के

गालियें देना, लड़ाइयें

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

अङ्क

एक दो तीन चार पाच छः सात आठ नौ दस
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

पाठ ३

अ–अगर तन मन धन वन जन मल फल
आ–आप माल बाजा राजा दान आशा
इ–इस इन दिन जिन मति गति इधर
ई–ईख गीत शीत दीन हीन तीन दरी
उ–उपशम सुख मुख गुण पशु बहुत
ऊ–ऊधम रूप धूप भूप भूमि दूषण भूषण
ऋ–ऋण नृप घृत तृण मृग तृषा वृथा
ए–एक रेल [illegible] मेल खेल [illegible]

ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ ण णः
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ त तं
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थ
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ द द
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ ध ध.
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ न नं
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ प प
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फ फ
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ ब बं
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भ भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ म म
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ य य
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ र र
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ ल ल
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ व व
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ श श

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

अङ्क

एक दो तीन चार पाच छः सात आठ नौ दस
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

पाठ ३

अ—अगर तन मन धन वन जन मन फल
आ—आप साल वाजा राजा दान आशा
इ—इस इन दिन जिन मति गति इधर
ई—ईख गीत शीत दीन हीन तीन दरी
उ—उपशम सुख मुख गुण पशु बहुत
ऊ—ऊधम रूप धूप भूप भूमि दूषण भूषण
ऋ—ऋण नृप घृत तृण मृग तृषा वृथा
ए—एक रेल मेल खेल

ऐ-ऐसा जैन वैल वैर दैव गवैया
ओ-ओर चोर मोर शोक रोग दोष
औ-और चौथ मौन कौर तरौना
अं-संग फंद तंग कंघा धंधा मंगल
अः-अंतः पुनः दुःख

पाठ ४

आँ ऊँ ऐं सों खाँ टाँ हाँ
हूँ वाँ माँ भूँ मैं में

आँख ऊँट साँस खाँसी
दाँत जहाँ बाँस माँग
वहाँ नहीं यहाँ कहाँ

मैं जाता हूँ। मा घर में
भूं करता है। मेरे दाँत..

पाठ ५

[मिले हुये अक्षर]

क्+ख = क्ख- रक्खा   प्+प = प्प- छप्पर
च्+छ = च्छ अच्छा   र्+य = र्य- आर्श्चय
ट्+ट = ट्ट पट्टी   ल्+क = ल्क बल्कि
त्+त = त्त पत्ता   व्+व = व्व फुव्वारा
श्+च = श्च निश्चय   स्+त = स्त समस्त
ष्+य = ष्य मनुष्य   ह्+व = ह्व विह्वल

कृष्ण धर्म प्रश्न बुद्धि विद्या पुण्य कार्य आनन्द आपत्ति अत्यन्त उपाश्रय जिनेन्द्र ब्रह्मचर्य वक्र अखबार कागज लड़का पढ़ना साफ।
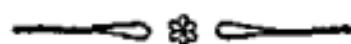
शिक्षा के वचन

प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले उठो,

शरीर को शुद्ध करो, माता पिता और बड़ों को प्रणाम कर जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन करने को जाओ, भगवान् के सामने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये, उपाश्रय में मुनि महाराज विराजे हों तो उनके दर्शन करो। स्कूल (पाठशाला) में जाकर प्रथम विद्यागुरु को प्रणाम करो, अपना पाठ शान्ती से याद कर सुना दो और दूसरा पाठ सीखो। पाठशालासे छुट्टी हो तब सीधे घर को जाओ। किसी से मत लड़ो। उद्यम करते रहो, समय बेकार मत खोओ। अभक्ष्य भोजन का त्याग करो, बिना जाना हुआ भोजन मत करो। पानी छान कर पीना चाहिये। वस्त्र साफ पहनने चाहियें, (चाहे हलके क्यों न हों)। सरलगति करो, दुराचारी के पास कभी मत बैठो गालियें देना, लड़ाइयें करना

तन्दुरुस्ती और अक़लमन्दी के खेल भी फ़ुरसत के वक्त खेलो, दिन भर मत खेलो। रात्रि के भोजन से कई प्रकार के नुक़सान होते हैं, दिन को ही भोजन करो। अनजान आदमी के साथ कभी नहीं जाना चाहिये। अनजान लड़के के साथ मत खेलो। हमेशा जेवर पहनने से जान का ख़तरा है। सत्य और मधुर वचन बोलो। हुनर (दस्तकारी) सीखो। दीन दुखी पर दया करो। सब जीवों को एक सा समझो। पुण्य कार्य से आनन्द और सुख प्राप्त होता है, पाप कर्म से दुःख भोगना पड़ता है। दान सुपात्रको देना चाहिये, कुपात्र दान पाप का कारण है। दया धर्म का मूल है। अपने शरीर की रक्षा करो। परोपकारी जीव इस लोक और परलोक में सुख पाते हैं। नित्य स्नान करके पूजा करो आपत्ति के

समय धैर्य रखना चाहिये ।

कसरत करने से शरीर तन्दुरुस्त रहता है । पढ़ने लिखने की चीजों को आदर से रक्खो, उनको थूक या पांव मत लगाओ। पढ़ने लिखने की चीजें बांटने से विद्या बहुत आती है ।

चौबीस भगवानों के नाम

१ श्री ऋषभदेवजी	२ श्री अजितनाथजी
३ श्री सम्भवनाथजी	४ श्री अभिनन्दनजी
५ श्री सुमतिनाथजी	६ श्री पद्मप्रभुजी
७ श्री सुपार्श्वनाथजी	८ श्री चन्द्रप्रभुजी
९ श्री सुविधिनाथजी	१० श्री शीतलनाथजी
११ श्री श्रेयांसनाथजी	१२ श्री वासुपूज्यजी
१३ श्री विमलनाथजी	१४ श्री अनन्तनाथजी

१५ श्री धर्मनाथजी १६ श्री शांतिनाथजी
१७ श्री कुंथुनाथजी १८ श्री अरनाथजी
१९ श्री मल्लीनाथजी २० श्री मुनिसुव्रतजी
२१ श्री नमिनाथजी २२ श्रीनेमिनाथस्वामीजी
२३ श्री पार्श्वनाथजी २४ श्री महावीरस्वामीजी

नवकार (नमस्कार) मन्त्र

नमो अरिहंताणं-श्री अरिहन्त भगवान् को नमस्कार हो।

नमो सिद्धाणं-श्री सिद्ध भगवान् को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं-श्री आचार्य्य महाराज को नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं-श्रीउपाध्याय महाराज को नमस्कार हो।

नमो लोए सव्व साहूणं–ढाई द्वीप वर्त्त मान सब साधुओं को नमस्कार हो।

एसो पञ्च नमुक्कारो–यह पाचों को किया हुआ नमस्कार।

सव्वपावप्पणासणो–सब पापों का नाश करनेवाला है।

मंगलाणच सव्वेसिं–और सब मंगलों में।

पढ़म हवइ मंगल–पहला मंगल है।

सौभाग्यमल और मौजीलाल की कथा।

श्रीपुर नाम का एक नगर था उस में धर्मचन्द्र नामक एक जैन श्रावक रहता था।

उसकी स्त्री का नाम प्रभावती था । यह साधारण स्थिति का आदमी था। इसके दो लड़के थे, एक का नाम सौभाग्यमल और दूसरे का नाम मौजीलाल था। सोभाग्यमल अपने पिता और गुरु की आज्ञा मानता था। और विद्या पढ़ने में बहुत शौक़ रखता था वह विनयवान् और सच्ची बात करने वाला था। इस लिये माता पिता और दूसरे लोग भी इसके साथ प्रेम करते थे। जब सौभाग्यमल युवावस्था को पहुँचा तब एक सद्गृहस्थ के घर उसका विवाह हुआ। उसकी स्त्री का नाम विद्यावती था। सौभाग्यमलजी धर्मात्मा होने से यथाशक्ति धर्म के हर एक कार्य्य में (देवपूजा, सामायिक, व्याख्यान श्रवण, प्रतिक्रमण पोषध, तीर्थ यात्रा, दान, परोपकार, साधर्मी, और दी~ दुखियों को योग्य मदद

देना, औषधालय, धर्मशाला, पशुशाला पाठ शाला आदि बनाने में) तथा सार्वजनिक फायदे के कामो में योग्य कोशिश करते थे।

सौभाग्यमलजी की योग्यता और होशियारी को देख कर एक धनिक सेठ बुधमलजी ने उसे अपने पास रखकर एक दुकान खोली, जिस में सौभाग्यमल का हिस्सा रक्खा। सौभाग्यमल की सलाह से रोजगार करने से उसने बहुत फायदा उठाया। कई सज्जन सौभाग्यमलजी के पास आकर धर्म, नीति और व्यापार सम्बन्धी वार्तालाप करते रहते थे। इसी कारण सेठ सौभाग्यमलजी का मान तथा यश राजा प्रजा में बहुत प्रसिद्ध हुआ। सुख पूर्वक धर्म, अर्थ और काम इन तीनों वर्ग के साधन करते हुए आखिर में

में पूर्णावस्था भोग कर, सर्व पुत्र, पौत्रादि परिवार का ममत्त्व छोड़ कर समाधिपूर्वक देव, गुरु, धर्म का स्मरण करते हुए सद्गति को प्राप्त हुए।

मौजीलाल अविनयवान् था। माता पिता और विद्या गुरु का हुक्म नहीं मानने से वह मूर्ख रह गया। इतना ही नहीं बल्कि माता पिता के देहान्त होने पर दुर्व्यसन (जुआ, चोरी, जारी, नशा आदि) का सेवन करने से बड़ा दुःखी हो गया था। कई वार वड़े भाई सौभाग्यमलजी ने उसको सहायता भी दी परन्तु फिर भी बुराई से बाज नहीं आता था। आखिर मर कर दुर्गति को प्राप्त हुआ। इस पाठ का सारांश यह है कि जो बालक अपने माता पिता और गुरु का हुक्म नहीं मानता

है वह मौजीलाल की भांति मनुष्य जन्म को व्यर्थ खो देता है और जो गुरु का हुक्म मानता है, विद्या अच्छी तरह से पढ़ता है, वह सौभाग्यमलकी तरह दुनियॉ में मान, प्रतिष्ठा और सुयश को प्राप्त करता है।

आरती।

जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरण कमलकी मै जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ विश्वसेन अचिराजी के नंदा, शांतिनाथ मुख पूनिम चंदा ॥ जय० ॥१॥ चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लाछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय० ॥२॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥३॥ मंगल आरती भोरे किजे, जनम २ को लाहो लीजे ॥ जय० ॥४॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥५॥ इति ॥

❋ मण्डल की विक्रयार्थ पुस्तकें ❋

१ सामायिक और देव वन्दन सूत्र विधि -)
२ देवसि राई प्रतिक्रमण मूल ।)
३ जीव विचार ।-)
४ नवतत्त्व ।-)
५ दण्डक ।)
६ कर्म ग्रन्थ पहला ।।।)
७ कर्म ग्रन्थ दूसरा ।।।)
८ कर्म ग्रन्थ तीसरा ।।)
९ कर्म ग्रन्थ चौथा २)
१० योग दर्शन तथा योग विंशिका १।।)
११ दर्शन और अनेकान्तवाद ।।)
१२ पुराण और जैन धर्म ।।।)
१३ भक्तामर कल्याण मन्दिर स्तोत्र =)।।
१४ वीतराग स्तोत्र ≡)
१५ अजित शान्ति स्तोत्र)।।
१६ श्रीउत्तराध्ययन सूत्रसार =)
१७ बारह व्रत की टीप ≡)
१८ जिन कल्याणक संग्रह -)
१९ ज्ञान पाँचम की विधि ≡)
२० भजन पचासा -)।।
२१ हिन्दी जैनशिक्षा १ भाग)।।।
२२ हिन्दी जैनशिक्षा २ भाग -)
२३ हिन्दी जैनशिक्षा ३ भाग -)।।
२४ हिन्दी जैनशिक्षा ४ भाग =)
२५ सदाचार रक्षा १ भाग ।-)
२६ प्राचीन कविता संग्रह ।=)
२७ देव परीक्षा -)।।
२८ विधवा विवाह उपन्यास ।।=)
२९ पंच तीर्थ पूजा -)।।
३० माधव मुख चपेटिका)।।
३१ सम डिस्टिंग्विश्ड जैन्स ।)
३२ स्टडी आफ जैनिज्म ।।।)
३३ सप्त भंगीनय अंग्रेजी ।=)
३४ महावीर जीवन विस्तार ।।।)
३५ हिन्दी व्याकरण ।=)
३६ उपनिषद् रहस्य =)।।
३७ साहित्यसंगीत निरूपण ।।=)
३८ चिकागो प्रश्नोत्तर (हिंदी) १)
३९ जैनधर्म विषयक प्रश्नोत्तर ।।)
४० जैनधर्म का स्वरूप =)
४१ आत्मानन्द शताब्दि अंक २।।)
४२ उपदेश तरंगिणी ३)
४३ रत्नसार २)
४४ तत्त्वार्थसूत्र प सुखलाल १।।)
४५ श्रीविज्ञानच प्रकारी पूजा ।)
४६ श्री महावीर प्रभु पंच कल्याणक पूजा -)
४७ द्रव्यानुभव रत्नाकर १।।)
४८ आबू (सचित्र) १ भाग २।।)
४९ आदिनाथ चरित्र २)